International Journal for Multidisciplinary Research
International Conference on Multidisciplinary Research & Studies 2023
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com
ICMRS'23

हिंदी दलित साहित्य में मानवतावाद

प्रा. डॉ. सरिता मंजु सिंधी

विभाग प्रमुख, हिन्दी विभाग, अमोलकचंद महाविद्यालय, यवतमाल, महाराष्ट्र

सारांश :

दलित साहित्य प्रस्थापित विचारधारा को नकारता हुआ सामाजिक समानता की बात करता है । दलित साहित्य पर गौतम बुद्ध और बाबासाहब के मानवतावादी एवं समतावादी जीवन दर्शन का प्रभाव दिखाई देता है । दलित साहित्यकारोंने अन्तजातीय विवाह के माध्यम से समाज में मानवतावाद का संदेश दिया है । दलित लेखकों ने मनुवादी विचारधारा को नकारकर समतावादी समाज का नर्माण करने की कोशिश करते है । दलित साहित्यकार अपने नाम के आगे की गोत्र का प्रयोग नहीं करते केवल मनुष्यता का रिश्ता रखते है । देश में शक कानून और आरक्षण व्यवस्था होने के बावजूद भी दलितों पर अन्याय, अत्याचार हो रहे है । दलित साहित्यकार अपनी रचनाओं दलितों की पीड़ा दर्द को प्रस्तुत कर रहे है । दलित साहित्य पीडित मनुष्यता और मनुष्य का पक्षधर है । वह पुरोहीतवाद और उसके व्यरस्थागत मूल्यों को नकारकर समतावादी और मानवतावादी मूल्यों को समाज में उजागर करते है ।

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में दलित साहित्यधारा का बड़ा योगदान है । दलित साहित्यकारों ने बाबासाहब आम्बेडकर के क्रांतिकारी तत्वज्ञान को अपने साहित्य सृजन के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली रूप में रखने का प्रयास किया | इन्होंने परंपरागत, आत्मरत साहित्य में रुचि नहीं दिखाई बल्कि दलितों के दुःख-दर्द, व्यथा-वेदना और दुर्दशा, शोषण, संघर्ष हुंकार, विद्रोह को अपनी वाणी में व्यक्त किया । मनुष्य को गुलाम बनानेवाली समाज व्यवस्था को नकारकर उन्होंने दास्यमुक्त, शोषणमुक्त, स्वस्थ, समतावादी समाज की स्थापना करने की कोशिश अपने साहित्य में की है । दलित साहित्यकार अपनी रचनाओं में भारतीय समाज का अभिन्न अंग रह चुके, इस देश के बहुत बड़े जनसमूह पर शूद्र - अति शूद्र का दाग लगाकर सदियों तक समाज से बहिष्कृत, तिरस्कृत कर दिया था । उनके पक्ष में अपना साहित्यिक संघर्ष बरकरार रखते हुए अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता का परिचय दे रहे हैं ।

भारतीय समाज में दलित के लिए विमित्र शब्द प्रयुक्त होते रहे है । इनमें 'शूद्र' सर्वाधिक प्राचीन और प्रचलित शब्द रहा है, जिसका प्रयोग अधिकांश हिन्दू धर्मशास्त्रों में हुआ है। इसके अतिरिक्त अछूत, अत्यंज, पंचम, हरिजन, अस्पृश्य आदि शब्दों का प्रयोग भी होता रहा है। हिन्दी के शब्दकोश के अनुसार, 'दलित' शब्द मसला हुआ, मर्दित, दबाया, रौंदा या कुचला हुआ । अस्मितादर्श के संपादक गंगाधर पानतावने कहते हैं, "दलित क्या है ? दलित कोई जाति नहीं है, बल्कि परिवर्तन और क्रांति का प्रतीक है । दलित मानवतावाद में विश्वास करता है । परंतु वह ईश्वर के अस्तित्व, पुनर्जन्म, आत्मा तथा अन्य तथाकथित धार्मिक ग्रंथों को अस्वीकार करता है, क्योंकि ये विचार उसको दास्यत्व का बोध कराते है । वह देश के दबाए सताए हुए समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जो वर्षों से बदतर जिंदगी जीने को विवश है ।" आजदलित वर्गीय लेखक या दलित वर्ध का व्यक्ति स्वयं को हीन दीन नहीं समझता, "दलित इज डिग्निफाईड" इस व्यापकता को और स्पष्ट

करता है । नामदेव ढसाळ के शब्दों में "अनुसुचित जातियाँ, बौद्ध, श्रमिक, मजदूर, भूमिहीन किसान और खानाबदोश जातियाँ, आदिवासी सभी दलित है ।" अतः हमारे विचार से दलित से तात्पर्य हिन्दू वर्ण-व्यवस्था के वर्ण शूद्र से ही है, जिसके अन्तर्गत आनेवाली समस्त जातियाँ इसमें आती है, जिनके लिए बाद में भारत के संविधान में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियाँ शब्द का प्रयोग किया जाता है।

दलित साहित्य प्रस्थापित विचारधारा को नकारता हुआ सामाजिक समानता की बात करता है । इस साहित्य में सदियों से वर्णवादी समाज में दलितों पर हुए अन्याय, अत्याचार को पूरे आक्रोश के साथ अभिव्यक्त किया है । डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के दर्शन एवं आंदोलनों से प्रभावित होकर दलित वर्गों के लेखक अपनी रचनाओं में मानवीय मूल्यों को उजागर कर रहे हैं । दलित साहित्य मुलतः दलितता से मुक्ति का संघर्ष और मनुष्य को केन्द्र में रखनेवाला साहित्य है । दलित वर्ग आज अपनी मुक्ति स्वयं चाहता है । जिसके लिए वह पहल और प्रयास कर रहा है, मार्ग में आनेवाली बाधाओं से टकराता है । संघर्ष के नये रास्ते और तरीके खोज रहा है । वह अन्याय को बरदाश्त नहीं करता, उसके लिए वें हर तरह का खतरा उठाने को तैयार है । दलित साहित्यकारों ने प्रस्थापित, परंपरागत चलते लेखन से अपनी अलग पहचान बनाई है । यह साहित्य आज पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बना हुआ है ।

दलित साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में दलितवर्ग की पीडा और उनके शोषण को उजागर किया है । उन्होंने मानवतावादी और समतावादी विचारधारा को भी उजागर किया है । 'वीरांगना झलकारीबाई', 'एकलव्य', 'भीमशतक', 'शम्बूक' आदि कविताओं में उपेक्षित दलित वर्ग का चित्रण किया है । दलित रचनाकारों ने कथा साहित्य को भी अपनी रचनाशीलता का हिस्सा बनाया । दलितों की व्यथा-कथा से लेकर प्रस्थापित व्यवस्था के प्रति उनका संघर्ष और आक्रोश और उसके व्यवस्थागत मूल्यों को नकारकर समतावादी मूल्यों को समाज में उजागर करता है । गौतम बुद्ध और बाबासाहब के मानवतावादी एवं समतावादी जीवन दर्शन को स्वीकार करते हुए विश्व शांतिका संदेश दे रहा है । वस्तुतः आज का दलित साहित्य संघर्ष पर उतारू सर्वहारा दलित वर्ग की आवाज है । साहित्य के माध्यम से दलित लेखक दलितों की दुर्दशा, हालात, जीवन यथार्थ समस्याओं को वाणी प्रदान कर बाबासाहब के विचारों को आगे बढ़ा रहा है । साथ ही शोषक व्यवस्था का असली चेहरा समाज के सामने रखते हुए दलित समाज को मानवता का दर्शन दे रहा है ।

देश में सक्त कानून और आरक्षण व्यवस्था होने के बावजूद भी दलितों पर अन्याय-अत्याचार हो रहे हैं । मनुवादी आज भी लोगों के दिलों में जिंदा है । आज भी दलितों को मानवतावादी दृष्टिकोन से देखा नहीं जाता है । पशुवत, अमानवीय व्यवहार उनके साथ किया जाता है । दलित साहित्य ने मनुष्यता को नकारनेवाली दलित बहुजनों को हासीए पर रखनेवाली हीनवस्था में पहुँचाने वाले विचार व्यवस्था पर कठोर प्रहार किया है । क्योंकि अम्बेडकरी लेखक दास्यमुक्त, शोषणमुक्त, स्वस्थ, समतावादी समाज की स्थापना करना चाहते है । दलित साहित्य विवेकशिल, विज्ञाननिष्ठ और मनुष्य केंद्रीत है।

संदर्भ :

1. डॉ. अम्बेडकर और समाज व्यवस्था, कृष्ण दत्त पालीवाल.
2. साहित्य और दलित चेतना, सं. महीप सिंह.
3. दलित विर्मश, केवल भारती.
4. छप्पर, जयप्रकाश कर्दम.
5. मुक्तिपर्व, मोहनदास नैमिशराय.
6. दलित साहित्य की भूमिका, हरपालसिंह अरूष.
7. भारतीय दलित साहित्य, सं. मनोज कुमार पटेल.